कथा सरिता

अनाज की कीमत

एक बार की बात है। विक्रमादित्य अपने मंत्री के साथ किसी गांव के दौरे पर गए। रास्ते में एक जगह उनके आगे-आगे एक किसान बैलगाड़ी पर धान की बोरियां रखकर अपने घर जा रहा था। उसकी किसी बोरी में कहीं छेद था। धान के कुछ दाने रास्ते में बिखरते जा रहे थे। यह देखकर सम्राट विक्रमादित्य ने कहा, रथ रोको! रास्ते में बहुत सारे हीरे बिखरे हुए हैं। मंत्री ने चारों तरफ नजर दौड़ाई, पर उसे कहीं एक भी हीरा नजर नहीं आया। उसने विनम्रतापूर्वक कहा, महाराज! क्षमा करें। लगता है आपको कोई भ्रम हुआ है। यहां तो एक भी हीरा नजर नहीं आ रहा है। सम्राट विक्रमादित्य नीचे उतरे और रास्ते में बिखरे हुए धान के एक-एक दाने को चुनकर अपने हाथ में इकट्ठा करने लगे। मंत्री को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने कहा, महाराज! ये तो धान के दाने हैं। हमारे खाद्य भंडार अनाज से भरे हैं। राज्य में अनाज की कोई कमी नहीं है। आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? विक्रमादित्य ने गंभीर स्वर में कहा, यह धान के दाने नहीं, हीरे हैं। यदि हम अन्न का अनादर करने लगेंगे, तो एक दिन ऐसा भी हो सकता है कि हमारे अनाज के भंडार खाली हो जाएं। मंत्री ने कहा, महाराज, आपका कहना सही है, पर अनाज के कुछ दानों के बिखर जाने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। इससे अधिक दाने तो किसानों से खेतों में बिखर जाते हैं और सड़कर नष्ट हो जाते हैं। विक्रमादित्य ने कहा, ये धान के दाने नहीं, अन्नपूर्णा हैं। अन्नपूर्णा को पैरों तले इसी तरह रौंदा गया तो एक दिन हम अन्न को तरस जाएंगे। जिस तरह एक-एक बूंद से घड़ा भर जाता है, उसी तरह एक-एक दाने के संरक्षण से ही अन्न के भंडार भरते हैं। किसान ने यह बातचीत सुन ली। वह अपनी बैलगाड़ी से उतरकर सम्राट को प्रणाम किया और बोला, राजन! हम किसान हैं और अन्न से ही हमारी पहचान है, लेकिन हम अनाज का सच्चा मूल्यांकर नहीं कर पाते, क्योंकि हमारी सोच अपने परिवार तक सिमटी हुई है। लेकिन आप दूरदर्शी, दयालु और न्यायप्रिय सम्राट हैं, आप प्रजा की भूख की पीड़ा समझते हैं, इसलिए आपको एक-एक दाने की कीमत मालूम है। मैं क्षमा चाहता हूँ और वादा करता हूँ कि आगे से अन्न का एक भी दाना बिखरने नहीं दूंगा। अब मंत्री को विक्रमादित्य की बात का मर्म समझ में आ गया।

इसलिए हमें अन्न का अनादर नहीं करना चाहिए। थाली में परोसा भोजन जूठा नहीं छोड़ना चाहिए। खाने-पीने की चीजों को व्यर्थ फेंकना नहीं चाहिए।

पंडित की सलाह

बात उन दिनों की है, जब स्वामी विवेकानंद अल्पज्ञात थे। उनका गहन ज्ञान और पांडित्य देखकर पोरबंदर के एक पंडित ने उनसे कहा - स्वामीजी! यहां भारत में धर्म के बहुत पंडित हैं। सभी को अपने ज्ञान पर गर्व है और कोई किसी की सुनना नहीं चाहता। सभी आपका उपहास करेंगे और आपकी विद्वता का समाज के हित में कोई उपयोग नहीं होगा। मेरी मानिए, पहले आप विदेश जाइए। स्वामीजी को यह विचार पसंद आया। वे अमेरिका चले गए। थोड़े दिन अमेरिका भ्रमण के बाद उनकी जमा पूंजी चुक गई। तब उनके किसी स्नेही ने उन्हें बोस्टन जाने का किराया दिया और विश्व धर्म सम्मेलन के एक सदस्य के नाम पत्र भी दिया। दुर्भाग्यवश वह पत्र रास्ते में कहीं खो गया। ठंड में ठिठुरते स्वामीजी ने लकड़ी के बक्से में रात बिताई। फिर सुबह होने पर पैदल चलते हुए सोचने लगे कि अब विश्व धर्म सम्मेलन में प्रवेश कैसे मिले? चलते-चलते थक गए, तो एक आलीशान भवन के नीचे बैठ गए। उस भवन से एक संभ्रांत महिला बहुत देर तक स्वामीजी को देखती रही। वास्तव में वह उनके तेजोमय व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुई। यह महिला श्रीमती एचडब्लू हैल थी, जिनकी पहुंच विश्व धर्म सम्मेलन के सदस्यों तक थी। उन्होंने स्वामीजी को बुलाकर उनसे बात की और इस तरह स्वामीजी की सम्मेलन में पहुंचने की राह आसान हो गई। इस सम्मेलन में दिए गए प्रभावशाली भाषण ने देश-विदेश में स्वामीजी को लोकप्रिय कर दिया। प्रेरणा कहीं से भी मिल सकती है, बशर्ते संकल्प शक्ति दृढ़ हो और प्रयास उचित दिशा में हो।

मनोबल ऊंचा रखें

एक गोष्ठी हो रही थी। प्रश्न उठा - स्वस्थ कौन और रोगी कौन? कुछ बीमार थे। उन्होंने स्वीकार किया - हम बीमार हैं, अमुक-अमुक रोग से ग्रस्त है। कुछ स्वस्थ थे। उन्होंने स्वीकार किया - हम स्वस्थ है। बीमारी का नाम तक नहीं जानते। चर्चाएं चलीं। स्वस्थ और अस्वस्थ की मीमांसा हुई। एक हट्टे-कट्टे व्यक्ति ने कहा, मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। इतने में ही तीसरे व्यक्ति ने व्यंग्य कसते हुए कुछ बात कह दी। व्यंग्य उस व्यक्ति के लिए गाली का काम कर गया। गाली गोली बन गई। वह तिलमिला उठा। वह आक्रोश में आकर व्यंग्य कसने वाले को बुरा-भला कहने लगा। क्रोध से वह आगबबूला हो गया। उस व्यंग्य करने वाले ने कहा - अरे! अभी तो तुम कह रहे थे कि तुम स्वस्थ हो। थोड़े से व्यंग्य से तिलमिला उठे, आपा खो दिया। क्या यह बीमारी का लक्षण नहीं है? ऐसे अनेक लोग होते हैं जिनकी वृत्ति और मनोबल बहुत कमजोर होता है। वे छोटी-सी समस्या के आगे घुटने टेक देते हैं। क्या वह बीमारी नहीं हैं? क्या ज्वर आना ही बीमारी है? क्या क्रोध से उत्तप्त हो जाना बीमारी नहीं है? स्वास्थ केवल शरीर से जुड़ा हुआ ही नहीं होता। उसका सम्बन्ध भाव से भी है। भावना के स्तर पर जो आदमी बीमार नहीं होता, वही सही अर्थ में स्वस्थ होता है। भावना के स्तर पर जो बीमार होता है, शरीर के बीमार न होने पर भी वह बीमार ही है। धीरे-धीरे शारीरिक बीमारियां भी उसे घेर लेती है। जिस व्यक्ति ने भाव को नहीं समझा, उस व्यक्ति ने अध्यात्म को नहीं समझा।

लक्ष्य से नहीं भटके आजाद

चंद्रशेखर आजाद ने भारत को ब्रिटिश गुलामी से मुक्त कराना अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना लिया था। इसके लिए उन्होंने घर-परिवार भी छोड़ दिया था। पारिवारिक दायित्वों से वे मुक्त थे और पूरा समय राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित थे। अंगेजों के विरूद्ध लड़ाई में जो पैसा लगता, उसे आजाद अपने साथियों के सहयोग से एकत्र करते थे। इस कारण कई बार उनके पास काफी धन होता था, जिसे वे विवेकपूर्ण तरीके से विविध मदों पर व्यय करते और उसका पूरा हिसाब भी रखते थे, ताकि उन पर कोई संदेह न करे। आजाद के माता-पिता बुजुर्ग हो चले थे और उनकी आर्थिक स्थिति भी अत्यंत दयनीय थी। चूंकि आजाद ने स्वयं को देश के काम में झोंक दिया था, इसलिए वे माता-पिता की विशेष मदद व देखभाल नहीं कर पाते थे। एक बार किसी ने उनसे कहा कि तुम्हारे पास देश के कामों के लिए इतना पैसा आता है। उसमें से कुछ सहायता माता-पिता की भी कर दिया करो। यह सुनते ही आजाद ने क्रोध में आकर कहा - इतनी कठिनाई से क्या मैं माता-पिता के लिए पैसे जमा करता हूँ? अगर उन्हें दे भी दूं, तो कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ेगा, किंतु मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि पैसे मैं भारत माता के लिए एकत्र करता हूँ। इसलिए कृपया मुझे भारत माता की सेवा के मार्ग से विचलित न करें और उनके विषय में कुछ कह या लिखकर मुझे प्रभावित करने का प्रयास न करें। सार यह है कि अपने पद, प्रतिष्ठा या अवसरों का उपयोग निजी स्वार्थों के लिए न करते हुए राष्ट्रहित में करना राष्ट्रभक्ति है और यह बड़े व व्यापक लाभों को साकार कर सकता है।

पूरी श्रद्धा रखें

पौराणिक कहानी है। एक बार एक देवता मनुष्यलोक में आया। एक स्थान पर देखा कि हजारों व्यक्ति एक आचार्य का प्रवचन सुन रहे हैं। देवता के मन में प्रश्न उठा - इतने सारे लोग धर्म-कर्म कर रहे हैं। सारे के सारे स्वर्ग में आएंगे तो वहां का एकांत समाप्त हो जायेगा। उस देवता ने अपनी परेशानी साथी देवता के समक्ष रखी। उसने कहा, चिंता मत करो। मैं इन लोगों के धर्म-कर्म से परिचित हूँ। इनमें से दो-चार व्यक्ति भी स्वर्ग में आने वाले नहीं हैं। चलो, मैं तुम्हें इसका प्रमाण देता हूँ। दोनों पंडित का रूप बनाकर एक चौराहे पर बैठ गए। प्रवचन सुनकर लोग उस चौराहे से गुजर रहे थे। पंडितों के रूप-रंग को देखकर दो-चार व्यक्ति उनसे बातचीत करने लगे। पंडितों ने कहा, अभी आप जिन आचार्य का प्रवचन सुनकर आ रहे हैं, हमने उनको नदी के तट पर देखा था। वे मछलियां खाते हैं। कुछ ही क्षणों में सारे नगर में यह बात फैल गई कि आचार्य मत्स्याहारी हैं। लोगों ने सोचा, ऊपर से तो बड़े तपस्वी हैं और भीतर-ही-भीतर पाप का पोषण कर रहे हैं। दूसरे दिन आचार्य परिषद की प्रतीक्षा में बैठे थे। पंडाल में दो-चार व्यक्तियों को ही देखकर वे आश्चर्य में रह गए। दोनों पंडितों ने आकर देखा। देवता ने कहा, देखो, कल और आज में कितना अंतर आ गया है। तुम नहीं जानते, आने वाले सारे श्रद्धालु नहीं होते, आवेश में आने वाले होते हैं। उनकी श्रद्धा पकी नहीं है, अधपकी है। चिंता मत करो। स्वर्ग में कभी भीड़ नहीं होगी। सचमुच ऐसा होता है। किसके प्रति, किसकी कितनी श्रद्धा है, इसका निर्णय करना कठिन होता है।

नई दिल्ली। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं विधायक डॉ.अजय चौटाला, विधायक अभय चौटाला एवं ब्र.कु.भारत भूषण।

जरौली। व्यापारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पूर्व सांसद श्याम बिहारी, पूर्व विधायक बालचंद्र मिश्र, माउण्ट आबू की ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य।

बोरीवली, मुम्बई। युवाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में समूह चित्र में हैं ब्र.कु.श्रेया बहन, ब्र.कु.धीरज बहन तथा प्रतिभागी।

नवाशहर। एस.एस.पी. धनप्रीत कौर को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राम तथा ब्र.कु.कांता बहन।

वर्धा। 'अखिल भारतीय केंद्रीय सेवा निवृत' कर्मचारियों के अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.माधुरी बहन तथा मंचासीन हैं संघ के अधिकारी।

रायपुररानी। सेवाकेंद्र के वार्षिक समारोह को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.किरण बहन तथा मंचासीन हैं सरपंच रमेश सैनी, शीशपाल राणा, ब्र.कु.रानी बहन तथा अन्य।